

रविवार 15 जून, 2025

विषय — भगवान मनुष्य के संरक्षक हैं

स्वर्ण पाठ: यशायाह 3 : 10

"धर्मियों से कहो कि उनका भला होगा।"

उत्तरदायी अध्ययन: विलापगीत 3 : 21-26

- ²¹ परन्तु मैं यह स्मरण करता हूँ, इसीलिये मुझे आशा है:
- ²² हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है।
- ²³ प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है।
- ²⁴ मेरे मन ने कहा, यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं उस में आशा रखूंगा।
- ²⁵ जो यहोवा की बाट जोहते और उसके पास जाते हैं, उनके लिये यहोवा भला है।
- ²⁶ यहोवा से उद्धार पाने की आशा रख कर चुपचाप रहना भला है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. 2 कुरिन्थियों 6 : 1, 16 (जैसा), 18

- ¹ और हम जो उसके सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने दो।
- ¹⁶ ... जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे।
- ¹⁸ और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है॥

2. निर्गमन 19 : 3, 4, 5 (अनुसरण करना) (से 1st ,)

- ³ तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया, और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकार कर कहा, याकूब के घराने से ऐसा कह, और इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना,
- ⁴ कि तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियोंसे क्या क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं।
- ⁵ तुम मेरी वाचा का पालन करोगे।

3. मलाकी 3 : 6

- ⁶ क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नाश नहीं हुए।

4. 2 राजा 4 : 8-16 (से 1st .), 17-23, 25-27, 30-37

- ⁸ फिर एक दिन की बात है कि एलीशा शूनेम को गया, जहां एक कुलीन स्त्री थी, और उसने उसे रोटी खाने के लिये बिनती कर के विवश किया। और जब जब वह उधर से जाता, तब तब वह वहां रोटी खाने को उतरता था।
- ⁹ और उस स्त्री ने अपने पति से कहा, सुन यह जो बार बार हमारे यहां से हो कर जाया करता है वह मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान पड़ता है।
- ¹⁰ तो हम भीत पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएं, और उस में उसके लिये एक खाट, एक मेज, एक कुर्सी और एक दीवट रखें, कि जब जब वह हमारे यहां आए, तब तब उसी में टिका करे।
- ¹¹ एक दिन की बात है, कि वह वहां जा कर उस उपरौठी कोठरी में टिका और उसी में लेट गया।
- ¹² और उसने अपने सेवक गेहजी से कहा, उस शुनेमिन को बुला ले। उसके बुलाने से वह उसके साम्हने खड़ी हुई।
- ¹³ तब उसने गेहजी से कहा, इस से कह, कि तू ने हमारे लिये ऐसी बड़ी चिन्ता की है, तो तेरे लिये क्या किया जाए? क्या तेरी चर्चा राजा, वा प्रधान सेनापति से की जाए? उसने उत्तर दिया मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूँ।
- ¹⁴ फिर उसने कहा, तो इसके लिये क्या किया जाए? गेहजी ने उत्तर दिया, निश्चय उसके कोई लड़का नहीं, और उसका पति बूढ़ा है।
- ¹⁵ उसने कहा, उसको बुला ले। और जब उसने उसे बुलाया, तब वह द्वार में खड़ी हुई।
- ¹⁶ तब उसने कहा, बसन्त ऋतु में दिन पूरे होने पर तू एक बेटा छाती से लगाएगी।

- 17 और स्त्री को गर्भ रहा, और वसन्त ऋतु का जो समय एलीशा ने उस से कहा था, उसी समय जब दिन पूरे हुए, तब उसके पुत्र उत्पन्न हुआ।
- 18 और जब लड़का बड़ा हो गया, तब एक दिन वह अपने पिता के पास लवने वालों के निकट निकल गया।
- 19 और उसने अपने पिता से कहा, आह! मेरा सिर, आह! मेरा सिर। तब पिता ने अपने सेवक से कहा, इस को इसकी माता के पास ले जा।
- 20 वह उसे उठा कर उसकी माता के पास ले गया, फिर वह दोपहर तक उसके घुटनों पर बैठा रहा, तब मर गया।
- 21 तब उसने चढ़ कर उसको परमेश्वर के भक्त की खाट पर लिटा दिया, और निकल कर किवाड़ बन्द किया, तब उतर गई।
- 22 और उसने अपने पति से पुकार कर कहा, मेरे पास एक सेवक और एक गदही तुरन्त भेज दे कि मैं परमेश्वर के भक्त के यहां झट पट हो आऊं।
- 23 उसने कहा, आज तू उसके यहां क्योंजाएगी? आज न तो नये चांद का, और न विश्राम का दिन है; उसने कहा, कल्याण होगा।
- 25 तो वह चलते चलते कर्मेल पर्वत को परमेश्वर के भक्त के निकट पहुंची। उसे दूर से देखकर परमेश्वर के भक्त ने अपने सेवक गेहजी से कहा, देख, उधर तो वह शूनेमिन है।
- 26 अब उस से मिलने को दौड़ जा, और उस से पूछ, कि तू कुशल से है? तेरा पति भी कुशल से है? और लड़का भी कुशल से है? पूछने पर स्त्री ने उत्तर दिया, हां, कुशल से हैं।
- 27 वह पहाड़ पर परमेश्वर के भक्त के पास पहुंची, और उसके पांव पकड़ने लगी, तब गेहजी उसके पास गया, कि उसे धक्का देकर हटाए, परन्तु परमेश्वर के भक्त ने कहा, उसे छोड़ दे, उसका मन व्याकुल है; परन्तु यहोवा ने मुझ को नहीं बताया, छिपा ही रखा है।
- 30 तब लड़के की मां ने एलीशा से कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे न छोड़ूंगी। तो वह उठ कर उसके पीछे पीछे चला।
- 31 उन से पहिले पहुंच कर गेहजी ने छड़ी को उस लड़के के मुंह पर रखा, परन्तु कोई शब्द न सुन पड़ा, और न उसने कान लगाया, तब वह एलीशा से मिलने को लौट आया, और उसको बतला दिया, कि लड़का नहीं जागा।
- 32 जब एलीशा घर में आया, तब क्या देखा, कि लड़का मरा हुआ उसकी खाट पर पड़ा है।
- 33 तब उसने अकेला भीतर जा कर किवाड़ बन्द किया, और यहोवा से प्रार्थना की।
- 34 तब वह चढ़कर लड़के पर इस रीति से लेट गया कि अपना मुंह उसके मुंह से और अपनी आंखें उसकी आंखों से और अपने हाथ उसके हाथों से मिला दिये और वह लड़के पर पसर गया, तब लड़के की देह गर्म होने लगी।

- ³⁵ और वह उसे छोड़कर घर में इधर उधर टहलने लगा, और फिर चढ़ कर लड़के पर पसर गया; तब लड़के ने सात बार छींका, और अपनी आंखें खोलीं।
- ³⁶ तब एलीशा ने गेहजी को बुला कर कहा, शूनेमिन को बुला ले। जब उसके बुलाने से वह उसके पास आई, तब उसने कहा, अपने बेटे को उठा ले।
- ³⁷ वह भीतर गई, और उसके पावों पर गिर भूमि तक झुककर दण्डवत किया; फिर अपने बेटे को उठा कर निकल गई।

5. यशायाह 49 : 8-10

- ⁸ यहोवा यों कहता है, अपनी प्रसन्नता के समय मैं ने तेरी सुन ली, उद्धार करने के दिन मैं ने तेरी सहायता की है; मैं तेरी रक्षा कर के तुझे लोगों के लिये एक वाचा ठहराऊंगा, ताकि देश को स्थिर करे और उजड़े हुए स्थानों को उनके अधिकारियों के हाथ में दे दे; और बंधुओं से कहे, बन्दीगृह से निकल आओ;
- ⁹ और जो अन्धियारे में हैं उन से कहे, अपने आप को दिखलाओ! वे मार्गों के किनारे किनारे पेट भरने पाएंगे, सब मुण्डे टीलों पर भी उन को चराई मिलेगी।
- ¹⁰ वे भूखे और प्यासे होंगे, न लूह और न घाम उन्हें लगेगा, क्योंकि, वह जो उन पर दया करता है, वही उनका अगुवा होगा, और जल के सोतों के पास उन्हें ले चलेगा।

6. इब्रानियों 4 : 16

- ¹⁶ इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे॥

7. उत्पत्ति 16 : 13 (तुम) (से:)

- ¹³ हे परमेश्वर, तू मुझे देखता है:

8. रोमियो 8 : 28, 31

- ²⁸ और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।
- ³¹ सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 78 : 28-32

आत्मा मनुष्य को आशीर्वाद देती है, लेकिन मनुष्य यह नहीं बता सकता कि वह "कहां से आती है।" इसके द्वारा बीमार लोग चंगे हो जाते हैं, शोकेत लोगों को शांति मिलती है, और पापियों का सुधार होता है। ये एक सार्वभौमिक ईश्वर के प्रभाव हैं, जो शाश्वत विज्ञान में निवास करने वाली अदृश्य अच्छाई है।

2. 1 : 1-4, 6-14

पापी को सुधारने और बीमार को ठीक करने वाली प्रार्थना एक पूर्ण विश्वास है कि भगवान के लिए सभी चीजें संभव हैं, - एक आध्यात्मिक समझ, एक निःस्वार्थ प्रेम। ... प्रार्थना, देखना, और काम करना, आत्म-अलगाव के साथ संयुक्त, ईश्वर का अनुग्रह है जो मानव जाति के ईसाईकरण और स्वास्थ्य के लिए सफलतापूर्वक किया गया है।

विचार अनिर्दिष्ट दिव्य मन के लिए अज्ञात नहीं हैं। इच्छा प्रार्थना है; और हमारी इच्छाओं के साथ भगवान पर भरोसा करने से कोई नुकसान नहीं हो सकता है, कि उन्हें शब्दों में और कर्मों में रूप लेने से पहले ढाला और बढ़ाया जा सकता है।

3. 139 : 4-9

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा; तब यहोशू, एलिय्याह और एलीशा ने किया। संकेत और चमत्कार के साथ ईसाई युग की शुरुआत हुई।

4. 328 : 4-13

मनुष्यों का मानना है कि वे अच्छाई के बिना रह सकते हैं, जब भगवान अच्छा है और एकमात्र वास्तविक जीवन है। इसका परिणाम क्या है? दिव्य सिद्धांत के बारे में बहुत कम समझना जो बचाता है और ठीक करता है, नश्वर पाप, बीमारी, और मृत्यु से केवल विश्वास में छुटकारा पाते हैं। इन त्रुटियों को वास्तव में नष्ट नहीं किया जाता है, और इसलिए जब तक, यहाँ या उसके बाद नश्वर लोगों से चिपके रहना चाहिए, वे विज्ञान में भगवान की सच्ची समझ

हासिल करते हैं जो उसके बारे में मानव भ्रम को नष्ट कर देता है और उसकी सहयोगिता की भव्य वास्तविकताओं को प्रकट करता है।

5. 120 : 15-24

स्वास्थ्य पदार्थ की नहीं, मन की स्थिति है; न ही स्वास्थ्य के विषय पर सामग्री इंद्रियां विश्वसनीय गवाही दे सकती हैं। दिमागी चिकित्सा विज्ञान यह दिखाता है कि यह असंभव है लेकिन मन को सही मायने में गवाही देना या मनुष्य की वास्तविक स्थिति का प्रदर्शन करना है। इसलिए विज्ञान के दिव्य सिद्धांत, भौतिक इंद्रियों की गवाही को उलट कर, मनुष्य को सच्चाई में सामंजस्यपूर्ण रूप से अस्तित्व के रूप में प्रकट करता है, जो स्वास्थ्य का एकमात्र आधार है; और इस प्रकार विज्ञान सभी बीमारियों से इनकार करता है, बीमारों को चंगा करता है, झूठे सबूतों को उखाड़ फेंकता है और भौतिकवादी तर्क का खंडन करता है।

6. 371 : 7-19, 27-32

क्रिश्चियन विज्ञान में अशिक्षित लोग भौतिक अस्तित्व के बारे में वास्तव में कुछ भी नहीं समझ पाते। ऐसा माना जाता है कि यहां पर मनुष्यों को उनकी सहमति के बिना ही लाया जाता है तथा उन्हें अनैच्छिक रूप से हटा दिया जाता है, बिना यह जाने कि ऐसा क्यों और कब किया गया है। जैसे भयभीत बच्चे काल्पनिक भूत को हर जगह ढूंढते हैं, वैसे ही बीमार मानवता हर दिशा में खतरा देखती है, और सही रास्ते को छोड़कर हर जगह राहत की तलाश करती है। अन्धकार भय उत्पन्न करता है। अपने विश्वासों के बंधन में बंधा हुआ वयस्क, बच्चे की तरह ही अपने वास्तविक अस्तित्व को नहीं समझ पाता है; तथा वयस्क को अंधकार से बाहर निकालना होगा, इससे पहले कि वह अंधकार में घिरे हुए भ्रामक दुखों से छुटकारा पा सके। दिव्य विज्ञान का मार्ग ही इस स्थिति से बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता है।

दौड़ को बढ़ाने के लिए आवश्यकता इस तथ्य के लिए पिता है कि माइंड यह कर सकता है; क्योंकि मन अशुद्धता के बजाय पवित्रता प्रदान कर सकता है, कमजोरी के बजाय ताकत और बीमारी के बजाय स्वास्थ्य। सत्य संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तनकारी है, और इसके “हर तिनका को पूरा” कर सकते हैं।

7. 596 : 20-27

घाटी। अवसाद; नम्रता; अंधेरा।

"चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा।" (भजन संहिता 23:4.)

यद्यपि यह रास्ता नश्वर अर्थों में अंधेरा है, दिव्य जीवन और प्रेम इसे रोशन करता है, नश्वर विचार की अशांति, मृत्यु का भय, और त्रुटि की कथित वास्तविकता को नष्ट करता है। क्रिश्चियन साइंस, विरोधाभासी अर्थ, घाटी को कली और गुलाब के रूप में खिलने के लिए।

8. 151 : 18 (ते)-30

रक्त, हृदय, फेफड़े, मस्तिष्क का जीवन, ईश्वर से कोई लेना-देना नहीं है। वास्तविक मनुष्य का प्रत्येक कार्य ईश्वरीय मन द्वारा संचालित होता है। मानव मन को मारने या ठीक करने की शक्ति नहीं है, और इसका परमेश्वर के मनुष्य पर कोई नियंत्रण नहीं है। जिस दिव्य मन ने मनुष्य को बनाया वह उसकी अपनी छवि और समानता को बनाए रखता है। मानव मन ईश्वर का विरोध करता है और इसे दूर किया जाना चाहिए, जैसा कि सेंट पॉल घोषित करते हैं। वह सब जो वास्तव में मौजूद है, वह है दिव्य मन और उसका विचार, और इस मन में संपूर्ण प्राणी सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत पाया जाता है। सीधे और संकीर्ण तरीके से इस तथ्य को देखना और स्वीकार करना है, इस शक्ति से उपजें, और सच्चाई की अग्रणी का पालन करें।

9. 387 : 27-32

ईसाइयत का इतिहास अपने स्वर्गीय पिता, सर्वशक्तिमान मन, द्वारा मनुष्य पर समर्थित शक्ति और रक्षा शक्ति के उदात्त प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो मनुष्य को विश्वास और समझ प्रदान करता है जिससे वह खुद का बचाव करता है, न केवल प्रलोभन से, बल्कि शारीरिक से।

10. 514 : 26-3

उस नियंत्रण को समझते हुए जिसे प्यार ने सभी पर रखा था, डैनियल शेरों की मांद में सुरक्षित महसूस करता था, और पॉल ने वाइपर को हानिरहित साबित कर दिया। ईश्वर के सभी प्राणी जो विज्ञान के सामंजस्य में चलते हैं, हानिरहित, उपयोगी और अविनाशी हैं। इस भव्य सत्य का एहसास प्राचीन योग्य लोगों के लिए शक्ति का स्रोत था। यह ईसाई उपचार का समर्थन करता है, और इसके मालिक को यीशु के उदाहरण का अनुकरण करने में सक्षम बनाता है। "परमेश्वर सब को देखा कि वह बहुत ही अच्छा है।"

11. 261 : 4-7

धीरज, अच्छे और सच्चे विचार को दृढ़ता से पकड़ें, और आप अपने अनुभवों के अनुपात में इन्हें अपने अनुभव में लाएंगे।

12. 369 : 5-13

जिस अनुपात में मनुष्य को सभी वस्तुएं मनुष्य के रूप में खो देती हैं, उसी अनुपात में मनुष्य इसका स्वामी बन जाता है। वह तथ्यों की एक दिव्य भावना में प्रवेश करता है, और यीशु के धर्मशास्त्र को समझने के रूप में बीमारों को ठीक करने, मृतकों को ऊपर उठाने और लहर पर चलने के रूप में प्रदर्शित करता है। इन सभी कर्मों से यीशु का विश्वास इस बात पर है कि सामग्री भौतिक है, यह विश्वास है कि यह जीवन का मध्यस्थ या अस्तित्व के किसी भी रूप का निर्माणकर्ता हो सकता है।

13. 368 : 14-19

जब हम त्रुटि में होने की तुलना में अधिक विश्वास करते हैं, तो हम आत्मा में अधिक विश्वास रखते हैं, बात करने की तुलना में अधिक विश्वास करते हैं, मरने की तुलना में जीने में अधिक विश्वास करते हैं, मनुष्य की तुलना में भगवान में अधिक विश्वास करते हैं, तब कोई भी भौतिक दमन हमें बीमार होने और त्रुटि को नष्ट करने से नहीं रोक सकता।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6